Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XII, Issue No. 23, October-2016, ISSN 2230-7540

धर्म की सच्ची अवधारणा

Dr. Kirti Garg*

Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार:- ***धर्म अपने आप में एक पूर्ण सत्य है। धर्म आदर्शों, उच्च परम्पराओं और सही नियमों का संग्रह है जो प्राचीन संस्कृति को हमारे पूर्वजों से लेकर आधुनिक मानव तक पहुँचाता है। धर्म का वास्तविक अर्थ है-विचार, शब्द और कार्य में धार्मिक गुण होना। धर्म के विषय में हर व्यक्ति अपनी-अपनी परिभाषा देता है। हर ग्रन्थ, हर सम्प्रदाय में धर्म के विषय में लिखा गया है, बताया गया है और लोग उस पर विश्वास करके धर्म के उन विचारों को अपनाते हैं तथा अपने जीवन में उतारते हैं। किन्तु जब हम अलग-अलग ग्रन्थों व पुस्तकों को पढ़ते हैं, साधु-संतों के विचार सुनते हैं और कुछ धर्म के ठेकेदारों के विचार सुनते हैं तो मन में धर्म के प्रतिकुछ प्रश्न भी उठते हैं। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए हमें गहराई से विचार करना चाहिए। आज का युग विज्ञान का युग है। आज प्रत्येक व्यक्ति हर चीज़ को अच्छी तरह से देख-परख करत भी उस पर विश्वास करता है। अतः आज के युग में धर्म अपने रूढ़ीवादी विचारों से मुक्त होकर नवीन रूप में जनसाधारण में अपनाया जा रहा है जिसका रूप अत्यन्त भ्रातृ भावपूर्ण, आनन्दमयी, विकसित, परमार्थ तथा अनेकता में एकता लिए हुए है और यही वास्तव में धर्म का सच्चा आधार है।***

----------X----------

भूमिका:-

साधारण शब्दों में धर्म का अर्थ है, "धारणकरना" अर्थात् नैतिक मूल्यों, उच्च मर्यादाओं, उच्च धारणाओं, उच्च संस्कारों और उच्च आदर्शों को धारण करना।'[1] कहने का तात्त्पर्य यह है कि हम जीवन में जब किसी भी अच्छी चीज़ को धारण कर लेते हैं तो वही हमारा धर्म बन जाता है। हमारे माता-पिता, गुरू और हमसे बड़े जो भी हमें अच्छे संस्कार देते हैं हम उन्हें धीरे-धीरे अपने जीवन में अपना लेते हैं, यही धर्म है, अर्थात् हम जिसमें आस्था रखते हैं वही हमारा धर्म बन जाता है। किसी चीज़ को अपनाने के लिए जो एकाग्रता और ध्यान लगाया जाता है वही धर्म है। धर्म अपने आप में एक पूर्ण सत्य है क्यूँकि धर्म निस्वार्थ है, धर्म परमार्थ है, धर्म आज्ञा है, धर्म ज्ञान है, धर्म विश्वास है, धर्म आस्था है, धर्म संस्कार है, धर्म एक औषधि है, धर्म प्यार है, धर्म आदर्श है, धर्म निष्ठा है, धर्म त्याग है, धर्म श्रद्धा है, धर्म शांति का एक स्वरूप है, धर्म असीमित है, इसकी कोई सीमा नहीं।

लेकिन आज कई लोग ऐसे हैं जो अपने स्वार्थ के कारण धर्म को सीमाओं में बाँध देते हैं और उसके बल पर अपने स्वार्थ की सिद्धी करते हैं। वे लोगों को उल्टा पाठ पढ़ाना आरम्भ कर देते हैं। जिससे मनुष्य भ्रमित होने लगता है और वह धर्म के सहीमार्ग को समझने की अपेक्षा धर्म के उचित मार्ग से भटक जाते हैं।

धर्म आदर्शों, उच्च परम्पराओं और सही नियमों का संग्रह है, जो प्राचीन संस्कृति को हमारे पूर्वजों से लेकर आधुनिक मानव तक पहुँचाता है। धर्म हमें शिष्टाचार और व्यावहारिक ज्ञान देने के साथ-साथ हमें जीना सिखाता है।

धर्म का अर्थ:-

धर्म का वास्तविक अर्थ है- "विचार, शब्द और कार्य में धार्मिक गुण होना।" धर्म की स्थापना कब हुई यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता लेकिन जब से सृष्टि का उदय हुआ तभी से धर्म का भी उदय हुआ होगा क्योंकि जब हम अध्ययन करते है तो पाते हैं कि जितने भी धर्म हमारे समाज में विद्यमान हैं वे सभी अलग-अलग समय में प्रकाश में आए। उसे हम धर्म न कह कर पंथ कह सकते हैं। जैसे-जैन धर्म, बुद्ध धर्म, इसाई धर्म, इस्लाम या मुस्लिम धर्म, सिक्ख धर्म इत्यादि लेकिन हम आज इन सभी पंथों को धर्म के नाम से जानते हैं।

धर्म के दो भेद हैं- "एक है संस्कृति, जिसका सम्बन्ध बाहर से है तथा दूसरा आध्यात्म, जिसका सम्बन्ध भीतर से है।"[2]

धर्म मनुष्य को सत्य बोलने के लिए प्रेरित करता है लेकिन ये भी बताता है कि हमें सत्य को कितना ग्रहण करना है और कितना छोड़ना है क्योंकि धर्म कहता है कि सत्य बोलो लेकिन कटु या अप्रिय सत्य नही जिसको सुनने से दूसरे मान सको कष्ट पहुँचे। मेरा भी यही मानना है कि धर्म को न अधिक

लचीले रूप में अपनाओ और न ही अधिक कठोर रूप में। इसके लिए मैं एक संगीत से सम्बन्धित उदाहरण देना चाहूँगी जो वीणा पर आधारित है कि जैसे, जब हम वीणा को सुर में करते हैं जो उसकी तंत्रियों को कभी ढीला करते हैं और कभी कसते हैं लेकिन यदि हम स्वर में मिलाते समय तंत्रियों को बहुत ढीला ही कर दें तब भी वह स्वर में नहीं होगी और यदि हम उसकी तंत्रियों को बहुत अधिक कस दें तब भी वह सुर से भटक जाएगी अर्थात् हम सही सुर में वीणा को नहीं मिला पाएंगे। ठीक ऐसे ही धर्म को हम अपने वीणा रूपी जीवन में यदि सही ढंग से नहीं अपनाएंगे तो हमारा जीवन भी बेसुरा अर्थात् अर्थ हीन हो जाएगा। कहने का तात्त्पर्य यह है कि धर्म की जो अच्छी धारणाएँ हैं उन्हें अपनाया जाए और बुरी या भेदभाव से पूर्ण धारणाओं का त्याग किया जाए।

धर्म का उद्देश्य

धर्म किसी से नफरत करना नहीं सिखाता, धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता, धर्म रंग-रूप, जाति-पाति से भी ऊपर होता है। सच्चा धर्म वही है जो तोड़ने का नहीं अपितु जोड़ने का काम करे। धर्म के अन्तर्गत् आने वाली सभी बातों को अन्ध विश्वास की तरह मानकर उसको अपना लेना सही बात नही है। जो बात धर्म में मनुष्य को सही लगे उसे ही अपनाना चाहिए क्यूँकि कहा भी गया है कि धुँआं देकर देर तक सुलगती रहने वाली तथा का लिख उत्पन्न करती रहने वाली आग की अपेक्षा कुछ देर तक उज्जवल प्रकाश देकर बुझ जाने वाली ज्योति प्रशंसा के योग्य है।

ये हमारा दुर्भाग्य है कि धर्म के कुछ ठेकेदार धर्म की राह को जहाँ चाहे वहाँ मोड़ देते हैं। जैसे अभी कुछ दिन पूर्व एक मुद्दा उठा जो कि दूरदर्शन पर भी बहुत चर्चा में रहा कि मदर सोंमेंमिड डे मील नही खाया जाएगा क्यूँ कि वह हिन्दु लोगों द्वारा बनाया जाता है लेकिन इस बात को कुछ मुस्लिम धर्म के ही लोगों ने अपने तर्कों से गलत करार दिया। कहने का तात्त्पर्य यह है कि केवल धर्मों के ठेकेदारही धर्म की गलत विचार धाराओं को साधारण जन में फैलाना चाहते हैं जबकि साधारणजन इन बातों को नकारते हैं। लेकिन हमारे देश में कुछ प्रतिशत लोग ही ऐसे हैं जो धार्मिक भावनाओं को आहत करते हैं। जबकि अधिकतर जनसाधारण चाहे वह किसी भी धर्म का हो इन बातों से कोसों दूर रहता है। उसे तो मेहनत करने से कमाना है और अपना भरण-पोषण करना है। उसे धर्म की ऊलजलूल बातों में न तो दिलचस्पी है और न ही उसके पास इतना समय है।

मेरा यह मानना है कि चाहे कोई भी धर्म हो, हर धर्म परमार्थ सिखाता है। धर्म के विषय में कहा भी गया है----

धृति क्षमा दमोस्तेयं, शौचंइन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यं, अक्रोधो, दसकं धर्म लक्षणम्।।

(मनुस्मृति, 6.12)

अर्थात् -

- धृति—प्रतिकूल परिस्थितियों में भी धैर्य को न छोड़ना- धर्म है।
- क्षमा—बिना बदले की भावना लिए किसी को भी क्षमा करना- धर्म है।
- दमो—मन को नियन्त्रित करके मन का स्वामी बनना- धर्म है।
- अस्त्रेय –किसी और की स्वामित्व वाली वस्तुओं और सेवाओं का प्रयोग न करना-धर्म है।
- शौचं--विचार, शब्द और कार्य में पवित्रता-धर्म है।
- इन्द्रिय निग्रहः– इन्द्रियों को नियंत्रित करके स्वतंत्र होना- धर्म है।
- धी-- विवके जो कि मनुष्य को सही और गलत में अन्तर बताए – धर्म है।
- विद्या—भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान-धर्म है।
- सत्यं-- जीवन के हर क्षेत्र मेंसत्य का पालन करना- धर्म है।
- आक्रोधो--क्रोध को नियन्त्रित करना- धर्म है।"[3]

ये दस भेद धर्म के परिचायक हैं।

हमारे देश में धर्म से सम्बन्धित जितने भी ग्रन्थ अथवा पुस्तकें हैं, सभी में सत्य और परमार्थ के मार्ग पर चलने को धर्म बताया गया है। जैसे 'गुरू ग्रन्थ साहिब' में गुरू नानक ने तथा अन्य गुरूओं ने जो वाणी लिखी है उसको सुनकर अथवा ग्रहण करने से मनुष्य भव सागर पार कर जाता है। इस वाणी का एक-एक शब्द मनन, चिन्तन योग्य है। यदि इसी वाणी को हम व्यवहार में ले आएं तो मनुष्य जीवन सुधार जाए और सफल हो जाए। इसी वाणी के द्वारा हम परमार्थ पर चल सकते हैं और साथ ही ईश्वर की प्राप्ति भी कर सकते हैं। इस प्रकार जिसने परमार्थ के मार्ग को प्रशस्त कर लिया उससे बड़ा धर्म और कोई हो ही नही सकता।

www.ignited.in

हमारा विषय है धर्म का वास्तविक आधार और इसका सार है धार्मिक एकता। भारत की सांस्कृतिक एकता कब धार्मिक एकता और सामाजिक एकता के रूप में मज़बूत होगी इसका अनुमान लगाना काफी कठिन है। हमारे देश के बहुत से महानुभावों ने जैसे तिलक, राजा राम मोहनराय, पं. ईश्वरचन्द विद्यासागर जैसे लोगों ने धार्मिक अनेकता में एकता लाने के भरसक प्रयत्न किए परन्तु कोई विशेष सफलता नही मिली। सन् 1893 में अमेरिका में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में केवल पाँच मिनट पाने के लिए स्वामी विवेकानन्द को कितना संघर्ष करना पड़ा था इसे सभी जानते हैं। बाद में उनकी विद्वता और योग्यता ने अमरिकी जनता का मनमोह लिया था। आज भी अमेरिका में रामकृष्ण मिशन एक लोकप्रिय संस्था है।

आधुनिक समय में ही नहीं अपितु पुराने समय से ही धर्म में एकता स्थापित करने के कई प्रमाण हमें मिलते हैं। जिसका एक प्रमाण मुम्बई का 'जंजीराफोर्ट' अर्थात् किला है। यह किला सिद्धी लोगों ने बनवाया था। ये लोग अफ्रिका से आए थे जो कि दास थे और यहाँ मजदूरी आदि कार्य करने आए थे। धीरे-धीरे ये लोग यहाँ बसने लगे। तब इन्ही के बीच में से कुछ शक्ति शाली लोगों ने ये जंजीरा का किला बनाया जो कि समुद्र के बीचों-बीच बनाया गया। समुद्र के बीचों-बीच होने के कारण यह बहुत सुरक्षित किला था। इस लिए कोई भी बाहर से आने वाले शासक इसे जीत न सके। यहाँ बसने के कारण इन सिद्धी लोगों ने यहाँ के अलग-अलग धर्मों के लोगों से विवाह किए और परिवार बसाए। इस किले के बीच में ही 3,000 के लगभग परिवार रहते थे यानि एक पूरा नगर इस किले के बीच में था। ये किला सभी सुख-सुविधाओं से भरपूर था। यहाँ सब धर्मों के लोग हिन्दु, मुस्लिम, बौद्ध सभी मिल जुलकर रहते थे। एक-दूसरे की संस्कृति का पूर्ण आदर करते थे। ऐसा धार्मिक एकता और बहुलवादी सांस्कृतिक विरासत का प्रमाण उस समय में कहीं इतना अच्छा नहीं मिल सकता।

आधुनिक समय में कुछ धर्म के ठेकेदारों के कारण धर्म एक सम्प्रदाय या गुट का पर्याय बनकर रह गया है। यदि हमें धर्म को एक व्यापक रूप में स्थापित करना है तो हमें धर्म से आत्मा को जोड़ना होगा। तभी पूरे जगत का स्वयमेव एकीकरण हो जाएगा क्यूँकि आत्मा को जानने का अर्थ है ब्रह्म को जानना और ब्रह्म को जानने का अर्थ है मानवता में किसी भी प्रकार की भिन्नता न रहना, और मेरे विचार में यही वास्तविक धर्म है।

यहाँ मैं यह भी अवश्य कहना चाहूँगी कि आज की नई पीढ़ी में कुछ अंश तक धर्म की सोच के प्रति बदलाव आया है और वे सभी धर्मों को एक दृष्टि से देखने लगे हैं। ये हर्ष की बात है कि आज हिन्दुओं का कोई भी त्यौहार हो, मुस्लिम का कोई त्यौहार हो, सिक्ख और ईसाइयों का कोई त्यौहार हो पुनः समग्र भारत में विशेषकर युवा पीढ़ी में इन सभी त्यौहारों को मनाने की एक लहर सी आ गई है। आज आशा की जाती है कि एक बार फिर अनेक धर्मों, अनेक भाषाओं, अनेक परम्पराओं, अनेक रीति-रिवाज़ों, अनेक मान्यताओं के बावजूद भी सारे भारत में स्नेह की भावना सुदृढ़ होगी। हमारे भारत के भिन्न-भिन्न धर्मों के अधिकतर लोग आपस में मिल जुलकर रहने की इच्छा रखते हैं केवल इनके कुछ प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो धर्म के ठेकेदार बनकर साधारण जनता को गुमराह करते हैं। जबकि यदि किसी साधारण मानव से पूछा जाए, चाहे वह बच्चा हो, बूढ़ा हो अथवा जवान सभी सदैव मिलजुल कर रहने की ही बात करते हैं। इसका एक जीता-जागता उदाहरण मैं स्वयं हूँ क्यूँकि मैं स्वयं एक ऐसे परिवार से सम्बन्ध रखती हूँ जहाँ लगभग सभी धर्मों जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, जैन आदि धर्मों के लोग एक साथ मिल जुलकर रहते हैं। एक-दूसरे के त्यौहारों को मिल जुलकर मनाते हैं, एक दूसरे की संस्कृति का आदर करते हैं और जिस धर्म में जो भी अच्छी बाते हैं उन्हें ग्रहण करने से झिझकते भी नहीं।

चूँकि मैं संगीत से सम्बन्धित हूँ इसलिए मेरे विचार में सच्चा धर्म होली के त्यौहार तथा धमार गायन शैली की तरह होना चाहिए जिसने किसी भी धार्मिक सम्प्रदाय में कोई अन्तर नहीं किया अपितु सबको एक धर्म जिसे हम इंसानियत का धर्म कहते हैं या जो आत्मा का परमात्मा से मिलन करवाता है, में पिरोदिया है। धमार एक ऐसी गायन शैली है जिसमें होरी गीतों का वर्णन रहता है। अतः इस धमारशैली ने कृष्ण से लेकर अकबर, औरंगजेब, तानसेन आदि तक को एक सुत्र में बाँध दिया क्योंकि धमार की धूम अथवा चर्चा केवल हिन्दुस्तानी लोक जीवन तथा वैष्णवों के मन्दिरों तक ही नही थी अपितु मुगलों के दरबार से लेकर उनके अन्तः पुरतक इसकी धूम थी। जिस प्रकार इस गायनशैली ने अपने समय में सम्पूर्ण देशको एक सूत्र में बाँध दिया था, राजा और रंक का अन्तर दूर किया, ब्राह्मण और चांडाल को गले मिलाया, गम्भीर स्वभाव के सज्जनों को अट्टहास करने पर मजबूर किया, सख्त व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों के मनको बदलकर उनके मष्तिष्क में भी मस्ती को भर देना और सभी के लिए एक आनन्दमयी वातावरण की सृष्टि करना इस शैली की विशेषता है। ठीक धर्म भी ऐसा ही हो जो सभी को एक धागे में पिरो दे और सभी को आनन्द प्राप्त करने तथा परमार्थ करने की क्षमता प्रदान करे।

निष्कर्ष

हम मज़हब, रिलीजन या सम्प्रदाय को धर्म मानने लगते हैं। एक धार्मिक संस्था के अनुसार, "रूहानियत और मज़हब में बड़ा अन्तर है। मज़हब मनुष्य के बनाए हुए हैं जबकि रूहानियत ईश्वर का वरदान है। मज़हब हमारे शरीर के माध्यम से हमारे

सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है और रूहानियत अर्थात् आध्यात्मिकता हमारी आत्मा द्वारा परमात्मा से जुड़ने का मार्ग है'।[4]

अतः ये कह सकते है कि महज़ब, सम्प्रदाय या रलीजन मनुष्यों द्वारा बनाई गई एक प्रकार की संस्थाएं हैं जिन्हें आज हम धर्म की संज्ञा देते हैं जब कि वास्तव में धर्म वह है जो सही अर्थों में आत्मा का परमात्मा से मिलन करवाए।

मेरा मानना है कि जब हमें ब्रहमज्ञान हो जाता है तब हमें मानव बन कर जीना आ जाता है। मानव बन कर जीने का अर्थ है समता के भाव, दयाभाव, भ्रातृभाव, परमार्थ के भाव का उजागर होना और जब ये सबभाव जागृत हो जाते हैं तब मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन करने में विश्वास करता है और दूसरों की आस्थाओं में दखल नही देता तथा सभी को समानता की दृष्टि से देखता है, यही वास्तव में धर्म का सच्चा आधार है या यूँ कहें कि धर्म की सच्ची अवधारणा है।

साक्षात्कार, तर्क-वितर्क, आमजन के विचारों, लेखों, पुस्तकों आदि के अध्ययन के साथ-साथ अपने निजी विचारों और समाज में होने वाली गतिविधियों के आधारपर इस शोध पत्र को लिखने का कार्य किया गया है। आशा है कि इस शोध पत्र को पढ़ने से अवश्य ही लोगों में धर्म के प्रति एक अच्छी अवधारणा बनेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गर्ग लक्ष्मीनारायण, निबन्ध संगीत, हाथरस उ0प्र0., संगीत-कार्यालय, हाथरस, तीसरा संस्करण. मार्च-2003, धमारगायकी-एक रंगारंग परम्परा, पृ.61, 4
2. मनुस्मृति- 6.12, 3
3. जोशी निर्मल, मंथन, दिल्ली, गोयल आफसैट वर्क्स, जी.टी. करनाल रोड, दिल्ली, मज़हब-रूहानियत, प्र.पृ., निवेदन से।
4. प्रवीणविजय, संगीतसारंग, जालन्धर, मॉडर्न पब्लिशर, जालन्धर
5. प्रवीणविजय, सुर-सरगम, जालन्धर, मॉडर्न पब्लिशर, जालन्धर, संगीत और धर्म, पृ. 310-311, 2,1

Corresponding Author

Dr. Kirti Garg*

Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla